संचिता दे

असम

बर्षा

बहुत दिनों बाद
बर्षा रानी
पायल पहने
आई झमाझम...
नाचने लगे तरु
गाने लगे पंछिया
आनंद उत्सव में
रमा
पूरा प्रकृति।।

पवन मंद–मंद
मुस्कुराए..
बादलों से पुछे–
मेरे बिन तुम यह
जलधार
पूरब से पश्चिम..
कैसे ले जाते ?

अचानक शैल के
स्पर्श से
चमक उठी
कादम्बिनी,
गरज–गरज के;
हृदय–पीड़ा
बखानती
अश्रु झरते..
टपटप–टपटप ।।

प्रश्न

कुछ प्रश्न
जो बार बार
उठते हैं उर में,
कहाँ से प्रारंभ?
कहाँ पर अंत?
क्या हैं?
क्यों हैं?
इस विश्व के
धरातल में !!

कुछ प्रश्नों के उत्तर
मिले
तो कुछ प्रश्नों के
नहीं..
सवाल- जवाब के
इस सिलसिले में
उलझी हैं पूरी
ज़िंदगी ।

प्रश्नों से पूछा मैंने
–
क्यों तुमने संसार
को दुविधा में
डाला?
हसँकर उत्तर दिया
उसने–
अगर "मैं" न होता
तो इस संसार में
ज्ञानदीप कैसे
जलता??

 ISSN:2583-8849